OUKA
Osaka University Knowledge Archive

Title	सीमेंट के ड्रम में मिला पत्र
Author(s)	आनंद, संचित
Citation	多言語翻訳 : 葉山嘉樹『セメント樽の中の手紙』. 2013, p. 22-24
Version Type	VoR
URL	https://hdl.handle.net/11094/61322
rights	
Note	

Osaka University Knowledge Archive : OUKA

https://ir.library.osaka-u.ac.jp/

Osaka University

सीमेंट के ड्रम में मिला पत्र

लेखक: हायामा योशिकी

अनुवाद: संचित आनन्द

मात्सुदो योज़ो सीमेंट को मशीन में उलटने का काम कर रहा था। बाकी का हुलिया तो ठीक ठाक ही था मगर उसके बाल और नाक का निचला हिस्सा सीमेंट से पूरी तरह सन चुका था। नाक में ऊँगली घुसेड़ कर सरिये की तरह खड़े हो चुके नाक के बालों से सीमेंट साफ़ तो करना चाहता था परन्तु अत्यधिक कार्यरत होने के कारण एक मिनट में सत्ताईस लीटर सीमेंट उगलने वाले कंक्रीट मिक्सर से बराबरी करने के लिए उसके पास नाक तक ऊँगली ले जाने का समय भी नहीं था।

वह नाक के सीमेंट से परेशान होते हुए भी ग्यारह घंटे की पाली में नाक की सफ़ाई नहीं कर सका। इस बीच एक बार दोपहर का और एक बार तीसरे पहर का विश्राम तो था, परन्तु दोपहर को भूख के कारण और तीसरे पहर में मिक्सर की सफ़ाई होने के कारण अंततः नाक तक ऊँगली ले जाना संभव नहीं हो सका। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि उसकी नाक अब प्लास्टर से बनी नाक की तरह सख्त हो चुकी हो।

पाली के अंत होने के समय अपने थके मांदे हाथों से उसने जिस सीमेंट के ड्रम को पलटा उसमें से एक छोटा लकड़ी का डिब्बा निकला।

'यह क्या है?' उसे थोड़ा अजीब तो लगा लेकिन उसके पास इसके लिए सोचने का वक़्त ही कहाँ था। बेलचे से उसने सीमेंट को तौलने के लिए सीमेनमास[1] में डाला। फिर उसमें से सीमेंट को मिलाने वाली ट्रे में उलटते ही वापस ड्रम से सीमेंट निकालने में जुट गया।

'एक मिनट! इस डिब्बे का सीमेंट के ड्रम में भला क्या काम?'

उस छोटे से डिब्बे को उठाकर उसने एप्रन पर लगी जेब[2] में डाल दिया। डिब्बा हल्का था।

'इसके हल्केपन को देखकर तो नहीं लगता कि इसमें पैसे भी होंगे?'

उसके पास सोचने का समय भी नहीं था क्योंकि उसे अगले ड्रम को खोलकर सीमेंट को फिर से सीमेनमास में तौलना था।

आखिरकार मिक्सर खाली घूमना शुरू हो गया। कंक्रीट बनाने का काम खत्म हो चुका था।

सबसे पहले उसने मिक्सर से जुड़ी हुई रबर पाइप के पानी से मुँह-हाथ धोया। खाने के डिब्बे को गले में लटका, एक पेग शराब और खाने के बारे में सोचते हुए नागाया[3] की ओर चल दिया। बिजलीघर अब लगभग अस्सी प्रतिशत बन चुका था। संध्या में ऊंचा खड़ा एना पर्वत पूरा बर्फ से ढका हुआ था। पसीने में तर शरीर को अचानक ठिठुरने जैसी ठण्ड का आभास होने लगा। नीचे बह रही किसो नदी सफ़ेद झाग उगलते हुए गरज रही थी। 'उफ्फ! अब मेरे बस की नहीं है। इस औरत ने भी फिर अपना पाँव भारी कर

---

[1] सीमेंट को सही मात्रा में मापने के लिए जमीन में बनाई गयी एक प्रकार की चकोर ओखली

[2] जापान में काम के दौरान पहने जाने वाले एप्रन के पेट के करीब वाले भाग में लगी जेब

[3] जापान में मजदूरों के लिए बनाये गए अस्थायी आवासगृह

लिया......' घर में लगी बच्चों की भीड़, भर सर्दी में जन्म लेने को उत्सुक बच्चा और आये दिन बच्चे पैदा करने वाली पत्नी के बारे में सोचते ही वह हताश हो उठा।

'एक येन और नब्बे सेन[4] की दिहाड़ी में से पचास सेन में एक शो[5] के भाव पे दो शो चावल हर रोज़, और बाकी के नब्बे सेन में कपडा लत्ता और सर पे छत इसी सब में चला जाता है, धत् तेरे की! मेरी दारु कहाँ से आएगी?'

तभी उसे जेब में रखे उस डिब्बे की याद आई। उसने अपनी पेंट के पिछले हिस्से से उस पर लगे सीमेंट को पौंछा।

डिब्बे पर कुछ भी नहीं लिखा था। फिर भी उसे कीलों से अच्छे से ठोककर बंद किया हुआ था।

'जरूर बेवकूफ बनाने के लिए किया होगा, क्या ज़रुरत थी इसमें कीलों की।'

उसने पत्थर पर डिब्बे को दे मारा। लेकिन जब वह उससे खुला नहीं तो उसने निराशापूर्वक उसे पैरों से कुचलना शुरू कर दिया मानों वह पूरी दुनिया को कुचल डालना चाहता हो।

जब उसने डिब्बे को उठाया तो उसमें से एक चिथड़े में लिपटा हुआ कागज़ निकला। उसपर कुछ इस तरह लिखा हुआ था।

----मैं 'एन' सीमेंट कंपनी में कट्टे सिलने का काम करने वाली मज़दूरिन हूँ। मेरा प्रेमी क्रशर में पत्थर डालने का काम करता था। फिर सात अक्तूबर की सुबह एक बड़े से पत्थर को क्रशर में डालते हुए, उस पत्थर के साथ वो भी क्रशर में समा गया।

उसके साथियों ने उसको बचाने की कोशिश तो की, मगर पानी में डूबते हुए आदमी की तरह मेरा प्रेमी भी उस पत्थर के नीचे दबता चला गया। फिर पत्थर और मेरा प्रेमी दोनों पिसते-मिलते हुए, लाल छोटे पत्थरों में बदलकर पट्टे पर आ गिरे। वो पट्टा चूरा करने वाली मशीन में घुसता चला गया। वहाँ स्टील के छर्रों के साथ छोटा, और छोटा होकर ऊंचे शोर के साथ चीख की जैसी भयंकर आवाज़ निकालते हुए पिस गया। फिर भट्टी में भुनकर शान से सीमेंट में बदल गया।

हड्डियाँ भी, शरीर भी, आत्मा भी चूर-चूर हो गयी। मेरा प्रेमी पूरा का पूरा सीमेंट में बदल गया। अगर कुछ बचा तो यह यूनिफार्म का चिथड़ा। अब मैं अपने ही प्रेमी को डालने के लिए कट्टे सी रही हूँ।

मेरा प्रेमी सीमेंट बन गया है। उस दिन के अगले ही दिन मैंने ये पत्र लिखकर छिपते छिपाते इस ड्रम में डाल दिया। तुम मज़दूर हो? अगर तुम मज़दूर हो तो मुझ बेचारी पर दया करके जवाब ज़रूर लिखना।

मैं बस इतना ही जानना चाहती हूँ कि इस ड्रम का सीमेंट कहाँ इस्तेमाल हुआ है?

मेरा प्रेमी कितने ड्रमों का सीमेंट बना? और उसे कहाँ कहाँ इस्तेमाल किया गया? तुम लेपक हो? मिस्त्री हो?

मेरा प्रेमी किसी थिएटर का हॉल या फिर किसी बड़ी कोठी की दीवार बने, ये मुझसे बिल्कुल बर्दाश्त नहीं होगा। लेकिन उसे मैं रोक भी तो कैसे सकती हूँ? अगर तुम मज़दूर हो तो कृपया इस सीमेंट को ऐसी जगह पर इस्तेमाल मत करना।

पर नहीं, ठीक है। कहीं भी इस्तेमाल कर लो। मेरे प्रेमी को चाहे कहीं दफ़ना लो, वो वहाँ अपना काम

---

[4] उन दिनों जापानी मुद्रा, एक येन में सौ सेन होते थे

[5] एक शो करीबन डेढ़ किलो का होता है

अच्छे से करेगा। कोई फर्क नहीं पड़ता। वो एक मेहनती इंसान है और मुझे यकीन है वो अपना काम बखूबी करेगा।

वो एक नर्मदिल और अच्छा इंसान था। और वो एक विश्वसनीय और मर्दाना आदमी था। वो अभी जवान ही था। अभी छब्बीस का हुआ ही था। वो मुझे अपनी आँख के तारे की तरह रखता था। लेकिन आज उसे कफ़न के बजाय मैं सीमेंट का कट्टा पहना रही हूँ। वो एक ताबूत में जाने के बजाय भट्टी में चला गया।

मुझे समझ नहीं आता की मैं उसे कैसे विदा करूँ? वो पूर्व में भी, पश्चिम में भी, दूर भी और पास भी, हर जगह दफ़न जो है।

अगर तुम मज़दूर हो तो ज़रूर मुझे जवाब देना। उसके बदले में मैं तुम्हें अपने प्रेमी के यूनिफॉर्म का यह चिथड़ा दूँगी। यह पत्र उसी में ही लिपटा हुआ है। इस चिथड़े में पत्थरों का चूरा और उस आदमी का पसीना सना हुआ है। उसने मुझे अपने यूनिफार्म में, जिसका कि ये चिथड़ा एक हिस्सा है, कितने ज़ोर से गले लगाया होता।

यह मेरी आपसे विनती है। इस सीमेंट को इस्तेमाल करने की तारीख़, पूरा पता, यह कैसी जगह इस्तेमाल किया गया और अगर हो सके तो अपना नाम भी ज़रूर ज़रूर बताएँ। आप भी अपना ध्यान रखिएगा। अलविदा।

मात्सुदो योज़ो को अपने आसपास बच्चों की कचर पचर का एहसास हुआ।

पत्र के आखिर में लिखा हुआ नाम-पता देखते हुए, शराब से भरे जाम को वो एक ही साँस में गटक गया।

'आज नशे में चूर होने का मन है। सबकुछ तहस-नहस करने का मन है।' कहकर वह चिल्लाया।

उसकी पत्नी ने कहा 'नशे में चूर होकर हो-हल्ला करना मुझसे बर्दाश्त नहीं होगा। बच्चों का क्या होगा?'

उसने अपनी पत्नी के पेट में सातवें बच्चे को देखा।